02 Course-8 Knowledge and Curriculum

Q.2. Describe the vision of education according to national curriculum framework 2005.
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार शिक्षा के दृष्टिकोण का वर्णन करें।

Ans

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास करने के साधन के रूप में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा को प्रस्तावित किया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की अनुशंसा का आरंभ रविन्द्रनाथ टैगोर के निबंध 'सभ्यता और प्रगति के उद्धरण' को आधार मानकर आरंभ किया गया। यह एक तरह का शिक्षा का वह दस्तावेज है जिसमें शिक्षा के संवैधानिक मूल्य के महत्व को ध्यान में रखकर समानता शिक्षा के रूप में रेखांकित की गई। इसमें विशेष रूप से विचार और क्रिया की स्वतंत्रता को रचनात्मक रूपों में वर्गीकृत किया गया। इस पाठ्यचर्या के निर्माण में पाँच मार्गदर्शक सिद्धांत निर्धारित किए गए है जो निम्न है :-

(i) ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना।

(ii) पढ़ाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित करना।

(iii) पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन कि वह बच्चों को बहुमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाए इसके कि वह पाठ्यपुस्तक - केंद्रित बन कर रह जाए।

(iv) परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना, और

(v) एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य-व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताए समाहित हो।

उपर्युक्त पाठ्यचर्या के मार्गदर्शक सिद्धांत, पाठ्यचर्या के निर्देशक सिद्धांत है जो यह निर्देशित करती है कि शिक्षा का लक्ष्य उस उद्देश्य से चिन्हित किया जाय जिसमें ज्ञान का सृजन स्वभाविक रूपों में प्राप्त हो और विषयों का निर्माण भाषागत हो। यहाँ भाषा से तात्पर्य यह है कि उस विषय - वस्तु की समझ का विकास कैसे हो, इसको आधार बनाकर भाषा की दक्षता को विषयगत बनाया जाय। विद्यालयी पाठ्यचर्या में जो विषय का क्षेत्र निर्धारित किया जाय, उसका आधार ज्ञान के समग्र विकास से हो। पाठ्यचर्या को आकर्षक बनाने के लिए विषय-वस्तु में कला एवं अभिव्यक्ति को जोड़कर अधिगम प्रक्रिया

में निर्मित किया जाय। कहने का तात्पर्य यह है कि जब ज्ञान को अनुभव में रूपांतरित किया जाएगा तो निश्चित तौर पर अधिगमकर्ता का एक अलग पहचान निर्मित होगा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में शिक्षा के मूल सरोकार को बुनियादी आधार से एक परिकल्पना के रूप में निर्मित करने पर विशेष रूप से बल दिया गया है क्योंकि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 में शिक्षा को पाठ्यपुस्तक पर केंद्रित की गई थी लेकिन NCF 2005 में शिक्षा को संसाधन एवं आत्मनिर्भरता से जोड़ा गया। यहाँ इस बात की ओर सूचित किया गया है कि इन दोनों पाठ्यचर्या की रूपरेखा में सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रक्रिया को आधार माना जा रहा था, उसको बदलकर प्रस्तावित पाठ्यचर्या की रूपरेखा सामाजिक परिप्रेक्ष्य के संसाधनों से जोड़ने पर केंद्रित किया गया है और सीखने की प्रक्रिया को अर्जन क्रिया के रूपों में जोड़ा गया। यानि अर्जन का कार्य अधिगमकर्ता पर केंद्रित किया गया। इसी संदर्भ का नामांकन बाल-केंद्रित शिक्षा किया गया। बाल-केंद्रित शिक्षा का तात्पर्य यह है कि बालकों को अपनी अनुभव एवं सक्रिय सहभागिता के लिए स्वतंत्र करना क्योंकि बालकों की अधिगम प्रक्रिया प्रारंभिक रूपों में सांकेतिक एवं अनुभव आधारित ही होता है और उसी वातावरण के आधार पर उसके संज्ञान का विकास

होता है। हम जानते हैं कि संज्ञान का सामान्य अर्थ होता है, "भाषा के माध्यम से स्वयं एवं दुनिया को समझना।"

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को जब विषयों के रूप में रेखांकित की गई तो पाठ्यचर्या को क्षेत्र एवं अवस्था आधारित आधार को निर्मित की गई, जिसमें विषयों को सबसे पहले भाषा से जोड़कर विषयों के स्तरों को पाठ्यचर्या के दृष्टिकोण पर अलग-अलग रूपों में निर्मित की गई जो हर विषय की भाषा को बहुभाषी रूपों में वर्णित करते हुए विषयों के नामों एवं क्षेत्रों को अलग-अलग रूपों में विभक्त की गई जो निम्न है :-

(i) भाषा (ii) गणित (iii) विज्ञान (iv) सामाजिक विज्ञान (v) कला - शिक्षा (vi) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा

उपर्युक्त राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के शिक्षा के दृष्टिकोण सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाय। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है।